वर्ष १०, अंक ९

श्रीकृष्णाय नमः

जून

आषाढ़ १९९३

वार्षिक चन्दा ३)

सम्पादक—
ब्र० कृष्णानन्द, दुर्गादत्त

एक प्रति ।)

विषय सूची

नं०	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	वेदोपदेश		२४८
२.	प्रार्थना		२५०
३.	सदाचार		२५२
४.	तीन मित्र	[कविता]	२६१
५.	गरीब की हाय	[कहानी]	२६३
६.	तित राम कथामृत रस पीजे	[ले० श्री राम सनेही]	२६६
७.	विनय मंजरी	[ले० श्री जगराजजी]	२६७
८.	ॐ नमः शिवाय चैक में	[स्वर्ण पदक इनाम]	२७४
९.	भजन		२७६

भक्ति के नियम

१. भगवान की भक्ति का प्रचार करना, गो रक्षण और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना, जलाशय बनवाना, मनुष्य मात्र के लिए शिक्षा का प्रचार करना, वैदिक अनुभूत औषधियों का प्रचार करना, ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति व प्रेम बढ़ाना, सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना, राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

२. यह पत्र प्रति अंग्रेज़ी मास की पहली तारीख़ को प्रकाशित हुआ करेगा।

३. अग्रिम वार्षिक चन्दा सर्व साधारण से २) होगा

४. जो महानुभाव २५) या इससे अधिक देंगे वह पत्र के संरक्षक और ५) देने वाले सहायक होंगे।

५. लेख सम्बन्धी पत्र व्यवहार सम्पादक भक्ति बोरी, तहसील रेवाड़ी के पते पर और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यवहार मैनेजर 'भक्ति प्रेस' आश्रम रेवाड़ी के नाम से भेजना चाहिये।

६. लेख सम्बन्धी पत्र व्यवहार सम्पादक के नामसे और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यवहार मैनेजर भक्ति के नाम से होना चाहिए

७. जिन ग्राहकों के पास जिस मास की "भक्ति" न पहुंचे, उनको स्थानीय पोस्ट आफिस से पूछ कर उस मास की अमावस्या से पूर्व कार्यालय में सूचना भेजनी चाहिये। स्थानीय पोस्ट आफिस में बिना पड़ताल किये अथवा अमावस्या के बाद सूचना आने पर "भक्ति" नहीं भेजी जायगी।

८. विज्ञापन छपाई प्रति मास साधारण पृष्ठ २॥) कवर का चौथा पेज ५)

भक्ति के संरक्षक और सहायक

राव श्रीराम जी रईस नांगल	१२५)
भक्त नन्दकिशोर जी चर्खी दादरी	१२१)
ला० गोपालदास जी रईस लाहौर	१११)
धर्म सिंह मावजी जेठवा कोलरीप्रोप्राइटर झरिया	१२०)
आनरेबिल डा० गोकलचन्द जी नारंग वज़ीर लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट लाहौर	१०१)
बाई बदामो देवी पुत्री लाला गनेशीलाल चर्खीदादरी	१०१)
श्रीमती रानी निहालकौर धर्मपत्नी कप्तान राव बहादुर बलबीरसिंह जी	१०१)
राव बहादुर, कप्तान राव बलबीर सिंह जी ओ० बी० ई० रामपुरा	१०१)
चौधरी शिवसहाय जी कोसली	५१)
लाला श्यामलाल जी कपूर दिल्ली	५१)
महाशय शोभाराम जी डूंगरवास	५१)
डाक्टर झवेरभाई नारायणभाई देसाई महुधा जिला कैरा	२५)
पण्डित पन्नालाल जी तोपखाना नं० ६ अम्बाला	२५)
चौधरी उमराव सिंह रहाड़ो धीरज दिल्ली	२५)
पण्डित जयराम जी 'सनातन' देहली	१५)
सूबेदार मेजर दीपचन्द जी	११)
मंगलसिंह गनर नं० ५ तोपखाना अम्बाला	११)
	५)

आश्रम के उद्देश

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।
२. गोरक्षा और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।
३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।
४. शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।
५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।
६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।
७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना।
८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

मनुष्य मात्र के लिये साधारण नियम।

१–मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।
२–उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।
३–एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।
४–साधु सज्जन का सत्संग करे।
५–विषयों के आधीन न हो।
६–शत्रुओं को मित्र बनावे।
७–अधिक उपाधि न बढ़ावे।
८–निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।
९–भूतमात्र पर दया रक्खे।
१०–अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

भक्ति प्रेस में मिलने वाली पुस्तकें।

१	भगवद्गीता संस्कृत तथा भाषा टीका सहिता	मूल्य	॥=)
२	भगवद्गीता दशम अध्याय पर्यन्त ...	,,	।)
३	गीता मूल (मोटा टाइप)	मूल्य नित्य पाठ	
४	वेदोपनिषद्		।)
५	अष्टोत्तरशतमन्त्रमाला	,,	।)
६	ज्ञानधर्मोपदेश	,,	।।।)
७	भक्ति ज्ञान योग संग्रह	,,	=।।)
८	सत्य शब्द संग्रह (गुटका)	,,	=)
९	सत्य शब्द संग्रह	,,	॥=)
१०	शब्द सदाचार संग्रह	,,	।।।)
११	शब्द सार संग्रह	,,	।)
१२	शब्दसंग्रह	,,	।।)
१३	सारसंग्रह	,,	।)
१४	भाषा फक्किका प्रकाश	,,	।=)
१५	मनुस्मृति सार	,,	=।)
१६	भक्ति चिन्तामणि	,,	।=)
१७	भगवद्भक्तांक	,,	॥=)
१८	भगवदंक	,,	॥।)
१९	गवांक	,,	१।)
२०	महात्मांक	,,	१)

नोटः-एक रुपये से कम मूल्य की पुस्तक मंगाने वालों को डाक महसूल सहित टिकट भेजने चाहियें।

मिलने का पताः-

श्री भगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी।

जनता में भगवद्भक्ति भाव को जाग्रत करने वाली सचित्र मासिक पत्रिका।

वर्ष १० | श्री भगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी, आसाढ़ ता० १ जून १९३६ | अंक ९ पूर्ण संख्या २४०

वेदोपदेश

देवो देवाना मसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसुनामसिचारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव स प्रथमतमेऽग्ने सख्येमा रिषामा वयं तव ॥

भावार्थ-द्युतिमान अग्नि! तुम सारे देवों के परमबन्धु हो। तुम सुशोभन और यज्ञ के सारे धनों के निवास स्थान हो, तुम्हारे विस्तृत यज्ञ गृह में हम अवस्थान करें। अग्नि! तुम्हारे बन्धु रहने पर हम हिंसित नहीं होंगे।

॥ ओ३म् ॥

प्रार्थना

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ओं ॥

ओं=सर्व व्यापक रक्षा करने वाले
सः=सत्ता स्फूर्ति देने वाले, सत्य स्वरूप
भुवः=दुःखों के नाश करने वाले, ज्ञान स्वरूप
स्वः=सुख स्वरूप
तत्=अनंत, अपार, सब के सारभूत परमात्मा
सवितुः-सब जगत् को उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले, संहार करने वाले, प्रेरक, प्रेरणा करने वाले
वरेण्यम्- सर्व श्रेष्ठ
भर्गो-तेज पुञ्ज ज्योति स्वरूप
देवस्य-दिव्य ज्ञान और आनंद के देने वाले, विजय कराने वाले, प्रकाश स्वरूप, सर्वशक्तिमान् दयालु, कृपालु परमात्मा,
धीमहि-हम आपका ध्यान करते हैं
धियः-बुद्धियों को
यः-जो
नः-हमारी
प्रचोदयात्-प्रेरणा करो। आप हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करें कि हम आपको प्राप्त हों। हमको पवित्र बुद्धि और अपनी भक्ति प्रदान कीजिये।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे ।
तत्तेजोस्माकं बुद्धिः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेज पुञ्ज ज्योति स्वरूप परमात्मन् ! ज्ञान और आनंद के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सब को उत्पन्न करने वाले ! सबका संहार करने वाले ! सब की रक्षा करने वाले ! सब को प्रेरणा करने वाले ! अनन्त, अपार, आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मन् ! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हममें तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सब को हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्न कारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनन्द पूर्वक हम आप को प्राप्त हों धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनंतबार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

॥ ओं शम् ॥

इस मन्त्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान के दर्शन होंगे, मोक्ष मिलेगी कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी, पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय, प्राप्त होगी। सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, निधि चाहने वाले को निधि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति, प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायगा इसमें सन्देह नहीं।

सदाचार

१-मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२-उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३-एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४-साधु सज्जन का सत्संग करे।

५-निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

६-अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

७-एक परमात्मा को ही सर्वोपरि इष्ट देव मानना चाहिये। उसी की पूजा करनी चाहिये। सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना चाहिये। उसके पवित्र नाम का गुप्त जप करना चाहिये। और उस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये।

८-ईश्वर जीव और माया, शाश्वत अनादि हैं, और ब्रह्म अनन्त अनादि है ऐसा मानना चाहिये।

९-मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविध दुःख की अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

१०-कर्मों के अनुसार उन्नति और अवनति माननी चाहिये।

११-अवतार, मूर्ति पूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को बुद्धि के अनुकूल हों तो मानना चाहिये।

१२-वेद शास्त्रादि प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातों को बुद्धि के अनुकूल मानना चाहिये।

१३-सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

१४-एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है वैसा बनता है। जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इस में जाति पात ऊंच नीच का कोई भेद न होना चाहिये।

१५-अध्यात्म विद्या, गीता, उपनिषद् कबीर आदि महात्माओं की वाणी का नित्य पाठ करना चाहिये।

१६-आलस्य छोड़ कर आजन्म विद्या अध्ययन करना चाहिये।

१७-सब काम समय पर करने चाहिये।

१८-बार बार सन्ध्या करनी चाहिये।

१९-ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिये।

२०-भगवान् के दर्शन करने के लिये योगाभ्यास करना चाहिये।

२१-देश, नरेश और महेश की भक्ति करनी चाहिये।

२२-सब मतों को उनकी पुस्तकों को, उनके अवतार, पीर पैगम्बरों को और अन्य देशों के मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिये।

२३-सब को अपना आपा समझना चाहिये और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिये।

२४-प्यारा हितकर सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिये।

२४-अपने घर पर आए हुए अतिथि का यथायोग्य पूजन सत्कार करना चाहिये।

२६-आपत्ति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिये।

२७-अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुए अपने गुण को भूल जाना चाहिये।

२८-सम्पूर्ण कर्मों के फलों को परमात्मा के अर्पण करना चाहिये।

२९-प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिये।

३०-बलवान की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुभीता देना चाहिये।

३१-मन वाणी और कर्म से सब को सुख पहुंचाना चाहिये।

३२-गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न करके दुधार बनाना चाहिये और गोचर भूमि छुड़वाना चाहिये।

३३-विषयों के आधीन न होना चाहिये।

३४-अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये।

३५-सारासार का विचार करते रहना चाहिये।

३६-साधु सज्जनों के सत्संग में जाना चाहिये।

३७-अधिक सन्तान न बढ़ानी चाहिये।

३८-जिसे अपने लिये चाहे उसे दूसरे के लिये करना चाहिये।

३९-हरेक काम सबकी भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।

४०-दूसरों की बड़ाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये।

४१-पड़ोसी का मान व आदर अपना जैसा करना चाहिये।

४२-खान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्य मात्र का कर लेना चाहिये।

४३-दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये।

४४-मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना चाहिये।

४५-मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये। और बहुत भूख लगे तब खाना चाहिये, और बहुत नींद आए तब सोना चाहिये।

४६-सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढ़ावे भोजन करना चाहिये।

४७-विवाह स्वयंवर की रीति से ज्ञात पात के विचार बिना, लड़का लड़की के प्रेम होने पर उनकी इच्छानुसार होना चाहिये।

४८-एक पुरुष को एक ही स्त्री के साथ विवाह करना चाहिये। आवश्यकता होने पर दूसरी से भी विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष को अधिकार है वही स्त्री को भी होने चाहिये।

४९-हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहिये।

५०-स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये उन्हें प्रणाम करना चाहिये, पैर की जूती समझने की जगह शिर का मुकुट समझना चाहिये और इसके स्मरणार्थ गौरी शंकर सीता राम

राधे श्याम, श्यामा श्याम इस मन्त्र का जप करना चाहिये ।

५१-स्त्री को पति व्रत धर्म और पुरुष को नारी व्रत धर्म पालन करना चाहिये। स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी होकर उत्तम सन्तान पैदा करने का दृढ संकल्प होना चाहिये।

५२-अच्छे २ लाभदायक, पूज्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहिये। वृक्षों की, पशुओं की, मनुष्यों की, औषधियों की, उत्तम नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहिये।

५३-तालाब, कूआ, मन्दिर, प्याऊ, आदि बनवाने चाहिये।

५४-ब्याज थोड़ा लेना चाहिये। देश और धर्म के लाभ को विचारते हुए व्यापार करना चाहिये।

५५-स्त्री, धन, गृह, वस्त्रादि से दूसरे की बहुत ज़रूरत को पूरा करना चाहिये।

५६-आवश्यकताएं जितनी कम हो सकें कम करना चाहिये।

५७-दस २ और पांच २ गांवों के मध्य एक २ आश्रम बनाना चाहिये और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाठशाला होनी चाहिये

५८-कभी २ नाचना और गाना भी चाहिये।

५९-१५ सोलह १८,२०, वर्ष तक उनके आचार की, ब्रह्मचर्य की पूरी देख भाल के साथ रक्षा करनी चाहिये।

६०-वृद्ध मां बाप की और दुःखी पड़ोसी तथा मनुष्य मात्र की सेवा करनी चाहिये।

६१-मुकुटदार टोपी, टोप, पाग इत्यादि सूर्य की किरणों से आंखों को रक्षा करने वाला शिरोपा पहनना चाहिये।

६२-बालकों को खेल के द्वारा शिक्षा देनी चाहिये। उनके दिमाग पर बहुत दबाव या बोझ न डालना चाहिये।

६३-सब को बांसुरी बजानी चाहिये। सबको हर दम खुश और खुर्रम रहना चाहिये।

६४-बलवान के साथ लड़ाई नहीं करनी चाहिये।

६५-सिर पर अधिक बोझ न धरना चाहिये।

६६-शरीर पर कभी बुहारी की धूल न पड़ने देना चाहिये।

६७-नखों से पृथिवी न कुरेदनी चाहिये, न हाथों से तिनका ही तोड़ना चाहिये। दोनों हाथों से सिर न खुजाना चाहिये।

६८-उदय होते, अस्त होते और मध्याह्न सूर्य को न देखना चाहिये। पानी में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा हो तो उसको न देखे। इंद्र धनुष को न देखे न दूसरे को दिखाना चाहिये।

६९-मल मूत्रादि वेगों को न रोकना चाहिये।

७०-काम क्रोधादि मन के वेगों को रोकना चाहिये।

७१-इन्द्रियों को न पीड़ित करे न उनका बहुत लाड़ ही करना चाहिये।

७२-पैर पर पैर रखकर न हिलाना चाहिये।

७३-देहरी पर बैठ कर खाना नहीं चाहिये। रात्रि

को देव मन्दिर में, अथवा वृक्ष के नीचे अकेले न सोना चाहिये।

७४-दिन में मलमूत्र उत्तर को मुख करके, रात्रि को दक्षिण, दोनों संध्याओं में उत्तर को मुंह करके और गड़बड़झाला में जिधर को चाहे उधर को मुंह करके मल मूत्र त्यागना चाहिये।

७५-जो कुछ संसार में होता है वह भावि के आधीन है ऐसी अवस्था में चिन्ता न करनी चाहिये। अडोल चित होना, शिर आई को शान्ति से सहना भगवान् के साथ प्रेम करना, यही जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।

७६-ईश्वर की उपासना जीवन, और प्रकृति की उपासना मरण समझना चाहिये। विद्या जीवन, अविद्या मरण, सत्य जीवन झूठ मरण, धर्म जीवन, और अधर्म मरण परोपकार जीवन और स्वार्थ मरण, पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मरण, ब्रह्मचर्य्य जीवन और व्यभिचार मरण, सादापन जीवन और सजावट मरण, एकता जीवन और विरोध मरण, मित्रता जीवन और शत्रुता मरण, वीरता जीवन और कायरता मरण, सत्संग जीवन और कुसंग मरण, संन्तोष जीवन और लोभ मरण, अहिंसा जीवन और हिंसा मरण, कृतज्ञता जीवन और कृतघ्नता मरण समझना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता है और मौत से डरता है। इसलिय जीवन के साधनों में रुचि और मृत्यु के साधनों से घृणा करनी चाहिये।

७७-श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता करे। और संसर्ग भी उन्हीं का करे। नीच मनुष्यों का संग, छोड़ देना चाहिये।

७८-देव, राजा, वृद्ध, विद्वान वैद्य अतिथि, इनकी सेवा करे।

७९-याचकों को निराश कर खाली हाथ न जानेदे।

८०-किसी की अवज्ञा न करे। गुरु व पूज्य लोगों के पास सदा नम्रता से बैठे। पांव पसार कर बैठना आदि अयोग्य कार्य न करें।

८१-अपकार करने वाले मनुष्यों के साथ भी सदा उपकार करे। सब को अपने समान जाने और द्वेषी से दूर रहे। कोई मनुष्य हमारा वैरी है अथवा अमुक मनुष्य का मैं वैरी हूं ऐसा किसी प्रकार प्रकाशित न करे।

८२-किसी स्थान में अपना अपमान हुआ हो और अपने ऊपर स्वामी का स्नेह न हो तो इसको भी प्रकाशित न करे।

८३-पानी में अपना प्रतिबिम्ब न देखे।

८४-नग्न होकर जल में न घुसे जिसकी गहराई विदित न हो, जिस जलमें मच्छादि हिंसक जीव रहते हों, उसमें भी न घुसे।

८५-बोलने के समय थोड़ा, हितकारी, सत्य, प्रसंग के अनुसार मीठा वचन बोले।

८६-अधिक रस वाले घी सहित और हितकारी पदार्थों का प्रमाण अनुसार भोजन करे। रात्रि में दही न खावे, बिना नमक के कभी दही न खावे, मूंग की दाल, शहद, घी शर्करा के बिना दही न खावे।

८७-मनुष्यों के अभिप्राय को जान कर जो मनुष्य जिस प्रकार से प्रसन्न हो उसी प्रकार वर्ते क्योंकि अन्य मनुष्यों को प्रसन्न करना ही चतुरता है।

८८-जिस प्रकार सहाय बिना मनुष्य सुखी नहीं होता उसी प्रकार सब के ऊपर विश्वास करने वाला अथवा सब के ऊपर सन्देह रखने वाला भी मनुष्य सुखी नहीं होता।

८९-कभी उद्योग करने से खाली नहीं बैठना चाहिये। किसी के सफली भूत उद्योग को देख कर उस पर ईर्षा न करनी चाहिये। जो पुरुष ऐश्वर्यवान के ऐश्वर्य को देख कर दुख मानते हैं व सदैव दुखी रहते हैं। विद्वान् को यह विचार करना चाहिये कि अमुक पुरुष को किस प्रकार यह ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। उसी विद्या और उसी उपाय से हम भी धनोपार्जन करके अपना यश प्रकाश करें। किसी के संचित किये हुए धन की इच्छा न करें।

९०-खिड़की आदि वाले हवादार मकान बनाने चाहिये।

९१-सुखियों से मित्रता, दुखियों पर दया, साधुओं से मुदिता और दुर्जनों से उपेक्षा करना चाहिये।

९२-प्रेत भूत और देवताओं के वहम और पाखण्ड को नहीं मानना चाहिये।

९३-मल, मूत्र, वीर्य आदि वेग को न रोकें। काम क्रोधादि मन के वेगों को रोकना चाहिये।

९४-वर्षा में धूप में छत्री धारण करके चले। रात में भय के समय हाथ में लकड़ी लेकर चले। जूते पहने रहे। देह की रक्षा करे। आगे को चार हाथ पृथिवी देख कर चले।

९५-जहां अग्नि का समूह हो वहां न जाय, संदेह युक्त वाहन पर न चढ़े। उन्मत्त हाथी के पास न जाय।

९६-श्रेष्ठ मनुष्यों की सभा में सन्मुख मुंह करके खांसी, श्वास, डकार, जंभाई और छींक नहीं लेवे। सभा में बैठ कर कभी नाक नहीं कुरेदे।

९७-ऊकड़ू कभी न बैठे, अधिक देर तक घुटने ऊंचे करके नहीं बैठे,

९८-अप्रिय वस्तु को निरन्तर न देखे। हाथों से केशों को नहीं हिलावे।

९९-दो पूज्य मनुष्य अथवा स्त्री पुरुष खड़े हों तो उनके बीच में होकर नहीं जाय।

१००-शत्रु अथवा वेश्या का अन्न कभी न खाय।

१०१-किसी का वृथा प्रतिभू न बने। किसी का वृथा साक्षी न हो।

१०२-किसी की धरोहर न रक्खे और जहां जूवा हो उसको दूर से छोड़दे।

१०३-स्त्री को अलग शैय्या पर न सुलावे। पुरुषों के स्थान में स्त्री को न रक्खे और छिद्रों वाली फटी टूटी शैय्या पर शयन न करे।

१०४-किसी की निन्दा न करे।

१०५-सब ब्रह्माण्ड को अपना शरीर और उसमें सत्ता स्फूर्ति दाता परमात्मा को अपना आत्मा समझे।

१०६-सुख और भलाई परमात्मा की तरफ से, दुःख और बुराई अपनी ग़लती से समझे

१०७-मर के मैं परमात्मा को ही प्राप्त होऊंगा ऐसा दृढ़ निश्चय रक्खे

१०८-जहां तक हो किसी को बुरा न समझे और न कहे

१०९-जैसा कुछ मिल जाय उसी में संतुष्ट रहे।

११०-अपने को जो सुन्दर और प्यारी वस्तु रुचे उसको परमात्मा का प्रसाद समझ कर ग्रहण करे।

१११-सवेरे उठते ही सबको ॐ जय श्री कृष्ण की कह कर सत्कार करे।

११२-गायत्री मंत्र से सूर्य के सामने खड़ा हो करके स्तुति प्रार्थना और उपासना करे।

११३-उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो।

११४-सिद्धि की दो कुंजियां हैं बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग करना।

११५-किसी बात में जल्दी न करो। जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प करो, करने के पूर्व उस काम की हानि लाभ भली भांति मन में तोल लो फिर उसको करो परिणाम चाहे जो हो।

११६-किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊंचे चढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है।

११७-मालिक पर भरोसा करो। पर ऊंट के पांव बांध कर रक्खो।

११८-किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है। यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

११९-स्वतन्त्र और पराधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिए दूसरे का आश्रित नहीं है।

१२०-एक से एक मिल कर ग्यारह होते हैं। अच्छे और नीति संयुक्त कामों के लिये मिलने का नाम नीति और विरुद्ध कामों के लिए मिलने का नाम "गुट्ट" है।

१२१-न्याय में कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध हो जाता है।

१२२-जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है तो उसको इन अवगुणों से बचना चाहिए:- अधिक सोना, ऊंघना, डर, क्रोध, आलस्य और टालमटोल।

१२३-राज भक्ति का भारी दर्जा धर्म, शास्त्र और नीति दोनों में है। राजा या बादशाह के द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ता है।

१२४-घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिन्ह है।

१२५-जो दूसरे की निन्दा नहीं करता, जिसको अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, जो दूसरों को सुख पहुंचाता है, छोटों से कोमलता तथा दया भाव, से और आदर सत्कार के साथ बर्तता है तथा खेल में भी किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है।

१२६-मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूं।

१२७-आधी से ज्यादा दुनियां पुनर्जन्म में विश्वास करती है।

१२८-सज्जनों के पड़ोस में रहो। भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो। शान्त स्वभाव रहो। जब कोई दोष लगावे तो अपने मनको न बिगाड़ो। सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में पिचक न जाओ। दूसरे का माल बेईमानी से

मत लो। जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो। किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो ।

१२९-पक्के धर्मी की बोली मीठी होती है। क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर बोलेगा।

१३०-आदमी अपना दर्पण आप है। अपनी आंख आप खोलो नहीं तो कष्ट खोलेगा।

१३१-झूठी खबर न उड़ाओ। बुरे से मेल न करो। तुम्हारे शत्रु का बिचरा हुवा बैल मिले तो उसके घर पहुंचादो परदेशी को न सताओ। जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिए भी छोड़ दो। अपने पड़ोसी के साथ अत्याचार न करो। मजूर की मजूरी रात भर न रक्खो। बहरे की ठठोली न उड़ाओ। अंधे की राह में ठोकर खाने को ढेला न रक्खो। मुखबिरी न करो। चुगली न खाओ। अपने परोसी को बुरे काम करने से डाटो। किसी को छोटी निगाह से न देखो। लग्न मुहूर्त का बिचार मत करो।

१३२-बूढ़ों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो। धरती को बेच न डालो।

१३३-प्रेम आकर्षण या खैंच शक्ति का नाम है जिससे यह सब रचना ठहरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप हैं अपने से बढ़ कर किसी को चाहना प्रेम है। जो अपने से बढ़ कर मालिक को चाहता है उसको तन, मन, धन अपने प्रीतम पर वार देने में क्या शोच विचार होगा

१३४-तीन बात जितनी बढ़ाओगे बढ़ेंगी:-भूख नींद और डर।

१३५-तीन की महिमा तीन जानते हैं। जवानी की बूढ़े, आरोग्यता की रोगी और धन की निर्धन ।

१३६-तीन बातों से बचो सब तुम्हें पसन्द करेंगे। किसी से कुछ न मांगो, किसी को बुरा मत कहो, और किसी के महमान के बिना बुलाए पुछलग्गू न हो।

१३७-तीन के बिना तीन नहीं रहते । धन बिना वाणिज्य के, बिद्या बिना शास्त्रार्थ के और राज्य बिना शासन के ।

१३८-बूढ़ों का आदर करना, छोटों को सलाह देना बुद्धिमानों से सलाह लेना, मूर्खों के साथ न उलझना।

१३९-चार तरह के आदमी होते हैं-मक्खी चूस, कंजूस, उदार और दाता। जो न आप खाय न दूसरे को दे वह मक्खी चूस, आप खाय पर दूसरे को न दे वह कंजूस, आप भी खाय और दूसरों को भी दे वह उदार और जो आप न खाय परंतु दूसरों को दे वह दाता कहलाता है। यदि दाता नहीं बन सकते तो उदार तो अवश्य ही होना चाहिए ।

१४०-संकट में मित्र की रण में शूर की, ऋण में साहू की, टोटे में स्त्री की, और रोग शोक में नातेदारों की, पहचान होती है ।

१४१-खुशी, रंज, रोजी, मौत यह अपने आप आती हैं ।

१४२-चार जाकर फिर नहीं आतीः-छूटा हुवा तीर, मुंह से निकली बात, बीती हुई उमर और टूटा हुवा दिल।

१४३- जो आके न जाय वह बुढ़ापा देखा ।
जो जाके न आय वह जवानी देखी ॥

१४४-चार चीजें पहले निर्बल दीखती हैं और आगे जोर दिखलाती हैं:- शत्रु, आग, रोग और ऋण।

१४५-पांच के संग से बचना चाहिए झूठा, मूर्ख, कंजूस डरपोक और दुष्ट।

१४६-मनुष्य को चाहिए क्रोध को प्रेम से जीते, बुराई को भलाई से, लालची को उदारता से, और झूठे को सत्य से ।

१४७-बुढ़ापे तक स्थिर रहने वाली भलाई सुखदाई है, दृढ़ता से पकड़ा हुआ विश्वास सुखप्रद है, ज्ञान का प्राप्त करना आनन्ददायक है और पापों से बचना सुखदाई है।

१४८-जो अन हुई बात को कहता है और जो हुई से इन्कार करता है वह दोनों नरकगामी हैं।

१४९-जिसका मन संयम में है उस ही में शक्ति, शान्ति, प्रेम और बुद्धि है। उस ही ने सम्पूर्ण जगत् को जीता है जिसमें पूर्ण शान्ति है ।

१५०-पण्डित चिन्ता, भय, शोक, मोह, निराशा और घृणा इन सब से दूर रहता है।

१५१-इन्द्रियों का निग्रह करना उत्तम है।

१५२-शरीर का संयम अच्छा है, वाणी का संयम उत्तम है, विचारों का संयम उत्तम है इसी तरह प्रत्येक बात में संयम उत्तम है। जो सब बातों में संयम कर लेता है वह सब दुःखों से छुट जाता है।

१५३-जो कुछ मिल जावे उसे तुच्छ न समझो, कभी दूसरों से ईर्षा मत करो। जो औरों से ईर्षा करता है उसे शान्ति नहीं मिलेगी।

१५४-जो अपने को नाम व रूप से भिन्न समझता है वह मिथ्या पदार्थों के लिए शोक नहीं करता। और वह निस्सन्देह भिक्षु है।

१५५-वह भिक्षु जो करुणा से काम करता है वह बुद्ध सिद्धान्त के मानने में अचल है।

१५६-पांच को छिन्न भिन्न करदे, ५ को छोड़दे, ५ से ऊपर होजा ? ऐ भिक्षु ! जो इन ५ बेड़ियों से बच निकला है वह ही पार गया है

१५७-बिना ज्ञान के ध्यान नहीं और बिना ध्यान के ज्ञान नहीं वह जिसको ज्ञान व ध्यान दोनों हैं निर्वाण के निकट है।

१५८-जिसका चित्त एकाग्र है, और जिसने संसार के प्रलोभनों को छोड़ दिया है वह शान्त कहलाता है

१५९-जो इच्छाओं के दास हैं वह कामनाओं के प्रवाह के साथ इस तरह नीचे चले जाते हैं जिस तरह मकड़ी अपने बनाए हुए जाले के साथ। बुद्धिमान् पुरुष अन्त में इसे काट कर संसार से विरक्त हो जाते हैं।

१६०-जो सामने है उसे छोड़ दो जो पीछे है उसे छोड़ दो और मध्य में है उसे भी छोड़ दो ।

१६१-जिस तरह वर्षा टूटे हुए छप्पर में घुस जाती है, उसी तरह मलीन हृदय में विषय प्रवेश कर जाते हैं।

१६२-जो हमारे जीवन जगत् का दाता है, वही हमारा पिता रक्षक भी है, वह महान् तेजस्वी एवं महान् शासक है।

१६३-वही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है बाकी लोग देखने में स्वतंत्र मालूम होते हैं मगर वास्तव में वह बन्धन से जकड़े हुए हैं।

१६४-फिजूल खर्च करने वाले के पास जैसे धन नहीं ठहरता ठीक इसी तरह मांस खाने

वाले के हृदय में दया नहीं रहती ।

१६५-जिसे उचित अनुचित का विचार है वही वास्तव में जीवित है, पर जो योग्य-अयोग्य का ख़याल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दों में की जायगी ।

१६६-किसी को अपने से प्रेम है तो उसको पाप की ओर ज़रा भी न झुकना चाहिए ।

१६७-झूठ और निन्दा के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो फ़ौरन ही मर जाना उत्तम है, क्योंकि इस तरह मर जाने से नेकी का फल मिलता है ।

१६८-जो लोग अपने मित्रों के दोषों की खुल्लेआम चर्चा करते हैं, वह अपने दुश्मनों के दोषों को भला किस तरह छोड़ेंगे ।

१६९-संसार में त्यागी पुरुषों से भी बढ़ कर सन्त वह है जो अपनी निन्दा करने वालों की कटु वाणी को सहन कर लेता है ।

१७०-काम के समस्त वन को काट डालो, काम के वन से भय उपस्थित रहता है ।

१७१-संसार को छोड़ कर तपस्वी हो जाना कठिन है, संसार को भोगना भी कठिन है, आश्रम का जीवन भी कठिन है, घर दुःखदाई है। बराबर वालों के साथ रहना भी दुःखप्रद है। दुःख सहित भ्रमण शील भिक्षुक ही सब से श्रेष्ठ है ।

१७२-यदि मनुष्य परदोष-दृष्टि रखता है और स्वयं सदा अपराध करने की वृत्ति रखता है तो उसके विकार बढ़ेंगे और वह मनः विकारों के दमन करने से बहुत दूर है ।

१७३-महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उस का बदला नहीं चाहते । भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस तरह चुका सकता है ?

१७४-योग्य पुरुष अपने हाथों से मेहनत करके जो धन जमा करते हैं, वह सब दूसरों ही के लिए होता है ।

१७५-हार्दिक उपकार से बढ कर कोई चीज़ नहीं।

१७६-जब जीव तुझे जान जाता है, तब उसके लिए कोई बेगाना नहीं रहता, तब उसके लिए सब द्वार खुल जाते हैं। हे प्रभु ! मुझे यह वर दो कि मैं अनेकत्व के बीच में एकत्व के अनुभवानन्द से कभी वञ्चित न रहूं ।

यह संक्षेप से सब मनुष्यों के लिए सदाचार कहा है । इसको अपने में धारण करो, और अपने चारों ओर बाहर और भीतर परमात्मा का चिन्तन करते हुए यही गीत गाएं ।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप ।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप ।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप ।
सुखात्मा चिद्रात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ।
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप ।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ।

ओंशम् ओं खं ब्रह्म ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

तीन मित्र

१

इक जन के थे तीन मित्र यूं तो परिचित दो।
किन्तु एक से अधिक प्रेम रखता था नित दो॥
उससे कम दूजे से भी मिलता था चित दो।
अगर प्रेम तीजे से था तो था किंचित दो॥
प्रथम मित्र से प्रेम अति, दूजे से भी नेह था।
तीजे से नहिं प्यार कुछ-था तो, सन्देह था॥

(२)

मन में निशिदिन ध्यान वह रखता प्रथम मीत का,
वर्णन कैसे करें भला हम गूढ़ प्रीति का।
था बरताव दूसरे से भी प्रेम-रीति का।
उस को भी वह मित्र समझता था सुनीति का॥
तीजे पर नहीं प्रेम था, न उस पर विश्वास था।
मित्र भाव से कभी कुछ हुआ न हास विलास था॥

(३)

दैव योग से न्यायालय में इसी मनुज पर।
चला एक अभियोग हुआ संयोग कठिनतर॥
तभी बुलाये साक्षी कारण तीन मित्रवर।
ताकि गवाही देंय सफाई की वह आकर॥
क्योंकि अगर अभियुक्त की साक्षी युक्ती-युक्त हो।
निस्सन्देह अभियुक्त तब न्यायालय से मुक्त हो॥

(४)

सुनो उस समय प्रथम मित्र ने आँख चुराई।
गया कचहरी तक भी न वह शठ अन्यायी॥
गया दूसरा न्यायालय तक करी भलाई।

पर भीतर जाने को उसने प्रीति नशाई ॥
दोनों मित्रों ने दिया धोका हा कैसा छला ?
शेष भरोसा क्या करें, वह फिर तीजे का भला ?

(५)

किन्तु तीसरे ने अपना कर्तव्य निभाया।
न्यायालय में जाकर सच्चा हाल सुनाया ॥
साक्षी देकर परम मित्र का दोष मिटाया।
यह सच्चा उपकार देख, वह जन शर्माया ॥
सच्चे झूठे मित्र की अब पहिचान उसे हुई ॥
अविश्वास, धोका मिथ्या, आँख हृदय की खुल गई।

(६)

अरे मूढ ! समझा भी यह किसका वर्णन है।
तीन मित्र हैं तेरे ही, तू ही वह जन है ॥
प्रथम मित्र समझा तूने अति प्यारा धन है।
भले बुरे कारज करता जिस के कारन है ॥
अन्त समय में किन्तु यह काम न आयेगा कभी।
पड़ा यहीं रह जायेगा साथ न जायेगा कभी ॥

(७)

सभी कुटुम्बी बंधु बान्धव मित्र तुम्हारे।
द्वितीय मित्र की गणना में हैं यह ही सारे ॥
साथ चलेंगे मरघट तक तो खैर विचारे।
किंतु अकेला जायेगा आगे तू प्यारे ॥
कुछ न सहायक हो सकें, हैं असक्त ये सर्वथा।
आता है रोना इन्हें या शंकित होना तथा ॥

(८)

मित्र तीसरे से न प्रेम है तेरा भाई।
अन्त काल में वही करेगा मगर सहाई ॥

"हरि स्मरण" शुभ कर्म मित्र है अति सुखदाई।
इस प्रियवर से ध्यान लगा तज के चतुराई॥
"मित्र धर्म मूलस्य च" भूल न तू इस को कभी।
ध्यान लगा प्रिय मित्र का जो तू सुख पावे सभी॥

दुर्गा प्रसाद गुप्त

गरीब की हाय

(कहानी)

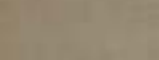

(१)

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांस से, लोह भस्म हो जाय॥

दुर्बल की हाय—गरीब की आह बहुत मोटी और प्रभाव शाली होती है। शीघ्र ही नतीजा निकाल देती है। धौंकनी में किसी बेबस गरीब पशु की मुर्दाखाल होती है और वह लोहे को भस्म कर देती है तो निर्बल और बेबस गरीब की दुखित हाय जो सिसकते हुए हृदय से निकली हो क्यों न अपकार कर्ता को भस्म कर देगी। आज हमी इसी प्रकार की एक सच्ची घटना सुनाते हैं पाठकों को इसे पढ़ कर दया का पाठ पढ़ना चाहिए और प्रत्येक प्राणी से सहानुभूति रखना सीखना चाहिए।

(२)

सन् १८५६ ई० का जिक्र है दिल्ली के कुछ शहजादे (राजकुमार) दिल्ली से बाहिर जंगल में शिकार खेलते फिरते थे और अत्यन्त बेदर्दी से बिचारे बेबस और छोटे २ निरीह पशु पक्षियों को सताते थे। छोटी २ चिड़ियां जो धूप से बचने के लिये वृक्ष के पत्रों में मुंह छुपाए भगवान के गुणानुवाद गुन गुना रही थी, क्या जानती थी कि हमारे शत्रु भी सिरों पर मंडला रहे हैं। अभी एक चिड़िया टहनी से उड़ कर दूसरी पर पहुंचना चाहती है कि बीच में गुल्ला लगता है और वह बिचारी फड़फड़ाती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ती है। और उसके इस प्रकार गिरने पर शाहजादे खिल खिला कर

हंसते हैं। इतने में एक साधु वहां आजाता है और इस अत्याचार भीषम हत्या को देखकर शाहजादों से कहता है कि तुम क्यों इन निरीह जीवों को सता रहे हो ? इनकी हत्या से सिवाय पाप के तुम्हारे क्या हाथ लगेगा। इन बीसियों चिड़ियों को मारने पर भी तुम इतना मांस प्राप्त नहीं कर सकोगे जिससे एक आदमी भी पेट भर सके।

साधु की शिक्षा सुन कर बड़े शाहज़ादे ने गुलेल हाथ से रख दी मगर छोटा शाहजादा जिसका नाम—मिर्ज़ानसीरुलमुल्क था—बहुत बिगड़ा और बोला, चलबे फकीर! दो टके का भिकमंगा हम को उपदेश देने चला है। अगर हमने सैर करने में दो चार चिड़ियों को मार डाला तो कौनसा गुनाह हो गया। फकीर बोला! आप नाराज़ न हों। आप बादशाह हैं बादशाह का काम प्रजा की रक्षा करना है। यह पक्षी भी आप की प्रजा हैं इन को मारिए मत, बल्कि रक्षा कीजिए, इस प्रकार फकीर के पुनः दख़ल देने पर नसीरमिर्ज़ा का क्रोध और भी भड़क उठा, एक गुल्ला गुलेल पर रक्खा और फकीर के घुटने पर इस ज़ोर से मारा कि गरीब मुंह के बल गिर पड़ा और बोला "हाय टांग टूट गई" फकीर गिर पड़ा और शाहजादे अपने २ घोड़ों पर चढ़ कर हवा हो गए थोड़ी देर में फकीर घिसटता हुवा अपने ठिकाने पर गया और दुखते हुये दिल से कहा तूने मेरी टांग तोड़ी खुदा (ईश्वर) तेरी टांग तोड़ेगा।

(३)

संसार परिवर्तन शील है कौन जानता है कि कल क्या होगा ? इस घटना के ठीक एक वर्ष पीछे देहली में ग़दर हो गया। शहर में तोपें गरजने लगीं चारों ओर लाशों के ढेर ही ढेर दिखाई देने लगे। शहर उजाड़ होगया। लाल किले से वही शाहजादे घोड़ों पर सवार घबराये हुये निकले और जान छुपाने के लिए पहाड़ गंज की ओर जाने लगे। दूसरी ओर से गोरे सिपाही धावा करते चले आरहे थे। उनका इनसे मुक़ाबिला (सामना) हो गया। सिपाहियों ने एक दम गोलियां बरसानी आरम्भ करदी मानो पक्षियों पर गुलेल वर्ष रही हो। घोड़े मर गये शहजादे भी घायल हो गये, और पृथ्वी पर लोटने लगे थोड़ी देर में गोरे सिपाही पास आ पहुंचे तो देखा दो शाहजादे मर चुके हैं परन्तु एक अभी जीवित है हाथ पकड़ कर उठाया तो मालूम हुवा कि इसके कोई मर्मस्थान पर चोट नहीं लगी है। डर के मारे मूर्छित हो गया था। सिपाही

उसको गिरफ़्तार कर के अपने कम्प में ले गये। बड़े साहब के सिपुर्द कर दिया। जब साहब को मालूम हुवा कि यह बादशाह का पोता "नसीरुलमुल्क है तो बड़े प्रसन्न हुये और उसको सुरक्षित रखने की आज्ञा देदी बिचारे नसीर मिर्ज़ा उसी कम्प में रस्सियों से बंधे हुये अपने दिन काटने लगे—

(४)

दिन पर दिन विद्रोह बढ़ता ही गया, अंग्रेज़ी सेना का पांव शहर में जमता जाता था। और बादशाही सेना से शहर खाली हो रहा था। खुद बादशाह बहादुरशाह गिरफ्तार हो गये। शाही खान दान के सब स्त्री पुरुष किला छोड़ कर भाग निकले। इसी दौड़ धूप में एक पठान सिपाही के प्रयत्न से किसी प्रकार हमारे मिर्ज़ा नसीर को भी भागने का अवसर मिल गया। मगर यह बिचारे रथों में चलने वाले भागना क्या जानें। लाचार एक जंगल की ओर भागे। पैरों में छाले पड़ गये प्यास के मारे प्राण निकलने लगे और जीभ सूखने लगी। थक कर एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। आंखों में आंसू भरे हुये ऊपर की ओर देखा कि एक चिड़िया अपने घोंसले में आराम से बैठी हुई है। इस को इस प्रकार प्रसन्न बैठे हुये देख कर शाहज़ादा कहने लगा। अरी चिड़िया तू आज मेरे से लाख दरजा उत्तम है जो अपने घोंसले में आराम से बैठी है मेरे लिये आज पृथ्वी पर कहीं भी ठिकाना नहीं है।

थोड़ी देर में उठ कर चला और रोता हुवा एक गांव में पहुंचा तो क्या देखता है कि एक वृक्ष के नीचे कितने ही गंवार इकट्ठे हो रहे हैं एक तेरह चौदह वर्ष की घबराई हुई सुन्दर बालिका बैठी हुई है और गंवार उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं। मिर्ज़ा ने लड़की को गौर से देखा और लड़की की निगाह मिर्ज़ा पर पड़ी तो दोनों धाड़ मार कर रोने लगे। यह लड़की मिर्ज़ा की बहिन थी।

(५)

थोड़े समय में ग़दर मिट गया शान्ति फैल गई। देहली के चांदनी चौक में फांसियां गड़ी हुई थी। अंग्रेज़ी अफसरों के हुक्म से प्रति दिन सैंकड़ों द्रोहियों को फांसी दी जाती थी, एक दिन मिर्ज़ा नसीर भी अपनी बहिन के साथ बड़े साहिब के सामने पेश हुये साहिब ने बेगुनाह समझ कर इनको छोड़ दिया। दोनों वहां से छूट कर एक सौदागर के नोकर हो गये लड़की बच्चों को खिलाती और भाई बाजार से सौदा ला देता

था। कुछ दिन पीछे लड़की मर गई और सरकार ने मिर्ज़ा नसीर को ५) मासिक पिन्शन नियत कर दी।

(६)

देहली के बाज़ार में एक पंगुला भिखारी गले में झोली टांगे हाथों के बल घिसटता हुवा फिर रहा है मुंह से बोला नहीं जाता क्योंकि लकवा (वायु रोग) के कारण टाँगे खराब हो गई, और ज़ुबान भी खिंच गई है यह दो कदम चलता और आँसू भरी हुई आँखों से लोगों की ओर देखता जो इस पर तरस खाता वह झोली में कुछ डाल देता। पाठक समझ गये होंगे वह हमारे मिर्ज़ा नसीरुलमुल्क बादशाह जादे है जिनको फकीर ने शाप दिया था कि मेरी टांग तूने तोड़ी है खुदा तेरी टाँग तोड़ेगा।"

दुर्गा प्रसाद गुप्त।

॥ नित राम कथामृत रस पीजे ॥

[लेखक देसोपकारक श्री वैष्णव पं० रामसनेही ("सनेही"]

जो देन चहो कछु या जग में तो परमारथ में पग दीजे । (१)
औ लेन चहो कछु जीवन में तो पर उपकार सुयश लीजे ॥
जो करन चहो कछु या तन तें, तो संतन की सेवा कीजे । (२)
औ तजन चहो कछु या मन तें, तो द्वेस कपट मद तज दीजे ॥
जबलौं यह देह सदेह रहे, तबलौं सहि प्रेम मुदित जीजे । (३)
हैं प्रेम प्रभाव अपार सखे, सत प्रेम विवस पाहन सीजे ॥
जो कर्म प्रधान, प्रधान कहैं, तो विधि कहँ दोष कहा दीजे । (४)
जो कर्मन बस है सब करिबो, तो सोच विचार करम कीजे ॥
तृष्णा दिन दिन जस वेग बढ़े, तस छिन छिन यह काया छीजे । (५)
"सनेही" जग भोग निरस तजके, नित राम कथामृत रस पीजे ॥

विनय मंजरी

[ले०—स्व० श्री गजराज जी श्रीवास्तव]

गतांक से आगे ।

सोरठा

राम नाम हरियान भव,
दुख का को दर हरन ।
भज मन मूढ़ अयान,
दीन बन्धु सीता रमण ॥६०॥

चौपाई

विधि संभव यह सिन्धु अपारा ।
दुर्गम विकट अमित विस्तारा ॥
अंबु भयेऊ अति खारा ।
विनम्रति वहति कुसंग बयारा ॥६१॥
गृह कारज बहु उठहिं तरंगा ।
जाको देखि होत चित भंगा ॥
कहुं २ देखि देखिय काम महीधर ।
अमरे बचैन जीव चराचर ॥६२॥
क्रोध मकर निशिदिन जल तैरत ।
चिन्ता सर्पिणी द्रोण लोभ रत ॥
मत्सर आदि विपुल जलचारी ।
रहहिं अशंक देत दुख भारी ॥६३॥
ताव न नाविक परत लखाई ।
सब विधि दुर्गम पार न पाई ॥
जो कहुं राम कृपा अस होई ।
जाय पार जग सागर सोई ॥६४॥

दोहा

राम नाम निशि दिन रटण,
सोइ बोहित सुख सार ।
कर्णधार संत संग चित,
सुखद धर्म पत पार ॥६५॥
मन निश्चय करि भाव सौं,
बैठिये सोइ जहाज ।
ज्ञान नियामक राखिये,
पूरन होवे काज ॥६६॥

विष्णु पद छंद

कात पूरन होइ इहि विधि,
पार सागर जाइये ।

आन युक्ति और नहीं,
वरू कोटि यत्न कराइये ॥
शास्त्र वेद पुरान अस मन,
ईश आज अहि हूं कहैं ।
राम नाम प्रताप अद्भुत,
सुपरि बारक मति लहैं ॥६७

कुन्डलियां

तनका तनक न आस है काहे करत गुमान ।
ठोकर लागे नेकहूं करि है प्राण प्रयान ॥
करि है प्राण पयान बान जब यम के लगि हैं ।
बहु परिवार सयान चहूं दिशि वो हुद्धगि हैं ॥
ऐंठ अकड़ सब छांड़ भांड़ की रीति अहंका ।
राम वाम भजु राम भरोसा नाहीं तनका ॥६८
सुपना यह जग है सही
करि विचार मन देख ।
श्रुति पुरान षट् शास्त्र में,
साधुन मति यह रेख ॥
साधुन मति यह रेख,
देख विचार अज्ञानी ।
सुपने मिलिगे राज,
जगै पुनि शवै सिरानी ॥
भव रिपु जीतन हार,
नाम रघुवर की रटना ।
राम राम भजु राम, भूल
मत जग है सपना ॥६९॥

दारा सुत अरु माल का,
कहा करै अभिमान ।
क्षण में यह सब नाश हीं,
क्या दिखलावे शान ॥
क्या दिखलावे शान न,
मान तजि दे अविचारी ।
छिन छिन छीजत देह,
नेह न तजत अति भारी ॥
अबहूं तोहि बचेत हेत,
करि हरि सों न्यारा ।
मिलि हहिं पद निर्वाण,
ध्यान धर राम उदारा ॥७०॥

कर हरि सों शठ नेह तू,
जो चाहसि सुख सार ।
कहा गर्व मन में धरै,
जीवन है दिन चार ॥
जीवन है दिन चार,
ख्वारन कर दिन अपना ।
मानुष तन का दाँव,
बेगि न मिलि है सपना ॥
जाहि न खायो काल को,
अस जग में चर अचर ।
करि विचार मन देख भजु,
हरि मंगल मोद कर ॥७१॥

हरि गीता छंद

क्रुर कशिपु दुख दाति ज्यों,
सत कर्म नाशन चित दयो ।
धर्म नाशन पाप रक्षक,
दुष्कर्म कारन कलि भयो ॥
प्रह्लाद इव जो चहहु मुक्ति,
भजहु रघुवर चाव सों ।
करि कृपा प्रभुवर रच्छहहिं,
गजराज नर मृग राय सों ॥७२॥
जिमि तरणि चढ़ि नर तरहिं,
सागर उरग झख न सतावहीं ।
तिमि जाहिं सागर पार भव,
चढ़ि नाम रघुवर नावहीं ॥
मद मोह मत्सर उरग झख,
गण देव कष्ट न पावहीं ।
गजराज भजु तेहि कारणों,
मन समुझि नाम प्रभावहीं ॥७३॥

दोहा

भज मन रघुपति सुख सदन,
जनक सुता भरतार ।
जाकी कृपा कटाच्छ तें,
मिलत पदारथ चार ॥७४॥
शिव सनकादिक शेष अज,
गिरा वेद हरि आप ।
कहि न सकहिं महिमा अमित,
नाम प्रभाव प्रताप ॥७५॥

सोरठा

भज मन सोई रघुवरी,
माया पति गुण ज्ञान विधि ।
हरन महा भव पीर,
हंस बश मणि शम्भु प्रिय ॥७६॥

चौपाई

रामश्याम तन नैन विशालहिं ।
शान्त स्वभाव निशाचर कालहिं ॥
सिय रमण धृत धनुष प्रचण्डहिं ।
भक्त दया कर खल गण दण्डहिं ॥७७॥
अमित प्रभाव शान्त सुख मूलहिं ।
प्रणतपाल नाशक त्रय शूलहिं ॥
मोह अरण्य प्रचण्ड कृशानुहिं ।
जप तप नेम कंज वन भानुहिं ॥७८॥
लोभ मोह मृग पुञ्ज पुलन्दहिं ।
ममता हाटक पुर रवि खिन्दहिं ॥
भव सागर घट सम्भव रामहिं ।
दुरित उलूक निकर खर घामहिं ॥७९॥
काम क्रोध मद करि मृग राजहिं ।
तत्पर नित्य विबुध काजहिं ॥
दिन कर कुल मणि अवध नरेशहिं ।
भज मन मूढ़ नित्य हृपि केशहिं ॥८०॥

दोहा

काल व्याल अंडज पतिहिं,
भंजन धरणी भार।
क्यों न भंजहु सब काम,
तजि ऐसे राम उदार ॥८१॥

घनाक्षरी

चाहे गिरि पात ज्यों तिरावे सिंधु माहिं टूक,
काठ को डुबावे वरु वारिधि मझारी जू।
चाहे खेत बोवे नभ चाहे वायु बांधे घर,
चाहे अग्नि माहि रचे बाग फुलवारी जू।
चाहे बिन मेघ बरसावे धार मूसर सों,
चाहे जल भूमि करे रंक छत्रधारी जू।
कहां लो बनाय मन्द बुद्धि गजराज कहे,
चार पाँच कोटि मुख ते हूं चुपमारी जू ॥८२

दोहा

अहो राम रघुवंश मणि,
खल बध निरत रमेश।
महिमा तुव को कहि सके,
भवे न जान महेश ॥८३॥

घनाक्षरी

तू ही है अनेक एक शेष रवि तू ही देव,
विष्नु है महेश तू ही सिद्ध ब्रह्म ज्ञानी है।
तू ही है आकाश भूमि अग्नि जल तू ही वायु
दूजो ना दिखात भनें वेद औ पुरानी है॥
तू ही है कहात गुप्त सगुण भी तू ही नाथ,
भाखे गजराज सब जानत जहानी है।
तू ही प्रभु राम जिन तार्यो है महान यह
आस है महान सुनि नाम छोह खानी है॥८४
गौतम की नारी कियो मीत कर्ण धारी लियो
भूधर उधारी राख्यो नाखर के नोक में।
पूतना बिदारी शंख चूड़ को संघारी भिल्ल
नारी को उधारी यश छायो लोक २ में॥
गावे त्रिपुरारी शेष इन्द्र विघ्न जारी ते न,
पावें छोर भारी नाथ राजहु त्रिलोक में।
ऐसे हरि दीनबन्धु तारिये कृपा निधान,
कीन्हों अति पाप नाथ आइ जग कोक में ॥८५
नागपति ध्यायो बैनतेय तजि आयो नाथ,
ग्राह सों बचायो जेहि जानत जहान है।
ध्रुव प्रह्लाद भिल्ल नारि को उबारे नाथ,
गुहगणकादि हाल गावत पुरान है॥
भारी है तिहारी करतूत सुखकारी जेहि,
शेष न बखान सके कोटि फनवान है।
ऐसे रघुवरि क्यों न हरो भव परि मेरो,
कहां गई दया जो मैं सुनी दया खान है॥८६

चौबोला छन्द

मनी वपुष धरि हे केशव,
तुम डूबत बेद रखाई।
कूरम रूपधरी तुमने,
हरि धरनी पीठ धराई॥
हे भगवान धृत शकर का,

तनु दाँतन पृथ्वी लाई ।
जय जगदीश जयति जय जय,
हरि दीनबन्धु रघुराई ॥
नरहरि हुइ हति हेम कशिपु,
तुम जन प्रह्लाद बचाई ।
बामन रूप छल्यो बलि राजा,
तिनहूं लोक नपाई ॥
भृगुपति रूप हते क्षत्रिन कहं,
इक्कीस बार गनाई ।
जय जगदीश जयति जय जय,
हरि दीनबन्धु रघुराई ॥८८॥
रघुपति रूप हते खल दसमुख,
राज्य विभीषण पाई ।
हलधर रूप तुम्ही ने धारी,
लोक लोक यश छाई ॥
बुद्ध शरीर धारि हे केशव,
ज्ञान अनेक न गाई ।
जै जगदीश जयति जय,
जै हरि दीनबन्धु रघुराई ॥८९॥
कल्की कराल कृपाण धारि,
तुम म्लेच्छ समूह नसाई ।
ऐसे ऐसे कर्म अनेकन,
कीन्ह्यो जन सुख दाई ॥
हरि हरि अज अहि नेति नेति कह,
केहि विधि कहाँ बनाई ।
आरत जन गजराज पुकारत,
पाहि पाहि रघुराई ॥९०॥

सवैय्या

कीन्ह अनुग्रह मो पर हे प्रभु,
दुर्लभ देह दियो सुखदाई ।
कछु नाथ बिनै हौं करौं मोहि,
जानि दुखी अति होहु सहाई ॥
बंशि कृपा पद अंकुश जानहु,
प्रेम के चारहिं देहु लगाई ।
कीजे सनाथ कहे गजराज विषै,
जल से मन मीन हटाई ॥९१॥
दुष्ट निकंदन दोष के गंजन,
भंजन रावण राक्षस राई ।
शंकर वत्सल भक्त कृपा कर,
सूरज वंश उजागर सांई ॥
जानकिनाथ चराचर नाथ,
महा भव नाशक राम गुसांई ॥
देहु मंगै गजराज कुबुद्धि पदाम्बुज,
भक्ति महा सुख दाई ॥९२

जलहरन छंद

सुर तरु सम तव चरण कमल तजि रुचक,
अयहुं रुचि भटकि भटकि नित ।

निगम सों निग्रह रहत निश दिन प्रभु पद,
रिपु रत रन युवति सुवन वित ॥
पर गुण सुनत दुखत उर मन हरि,
अवगुण सुनि पर हरषत अति चित ।
मिहिर कुलज प्रभु बसहु जो उर मम,
नशहि छिन के तम भवहि हृदय सित ॥९३॥

घनाक्षरी

संत हित कारी दुष्ट रावण विदारी नाथ,
तारी रिषि नारी राखे द्रौपदी के लाज को।
ग्राहतें उबारे गज व्याध गृद्ध तारे आप,
जानत जहान सारे तेरे शुभ काज को ॥
जैसे गज हेतु मृग राज शैल हेतु गाज,
विपति बटेर बाज तैसे संत काज को ।
आये हौं शरण आज दीन बन्धु औधराज,
राखो अब लाज निज दास गजराज को ।९४॥

श्लोक

सुन्दिर विग्रह मादन ईशगम्,
भव घनेश नरिं कमला पतिम्।
सकल कौस्तुभ चित्त मनोहरम्,
मिहिर वंश मणि शिवदं भजे ॥९५॥
असुर वन धनञ्जयं अच्युतम्,
सुर नर मुनि सेव्य मानं हरिम् ।
कलि मल हरणं धराजापतिम्,
सरसिज नयनं अनादिं भजे ॥९६॥

दोहा

अग जग भय सब रहित
प्रभु परमानन्द स्वरूप ।
पाहि पाहि रघुवंश मणि,
प्रणत पाल सुर भूप ॥९७॥

शिखरणी छंद

सुखासीनं रामं दसमुख,
खरारिं सिय पतिम् ।
भजाम्यहं नाथं मिहिर,
कुल दीपं शिव प्रियम् ॥
अहो दीनानाथा हरहु अघ,
वृन्दम् कलि भयम् ।
नमो हे हे स्वामी बसहु,
सुख सिंधो हृदय में ॥९८॥
मुरारी गोविन्दा सकल,
दुख छन्दा दरन हो ।
द्विजा धन्या त्राता प्रणत,
सुत नाता करन हो ॥
सुता सिंधु नाथा असुर,
गण माथा हरन हो ।
नमो हे हे स्वामी विमल,
रजनामी चरण हो ॥९९॥

अहो हे पद्मेशा मधुरिपु,
सुरेशा प्रभु हरे ।
पिनाकी लोकेशा नमत,
तोहिं केशा नित खरे ॥
अहिल्या गृद्धेशा गुह,
द्विज गजेशा सब तरे ।
यही आशा भारी मंगहुं,
गिरिधारी पद परे ॥१००

करूं सेवा कैसे नित रत,
अनैसे मम मना ।
अहौं माया भोगी रहत,
नित रोगी दुख सना ॥
लखौं ना मैं भूली धरम,
पथ सूली इक छना ।
करो दायानाथा अनल,
अघ पाथा घन घना ॥१०१॥

सुना देखा ध्याया विषय,
नित चाया दुख भरी ।
हंसा खेला रोया सब,
समय खोया तन जरी ॥
नहीं जाना स्वामी महत,
गुण नामी तुव हरि ।
अहो हे औघेशा हरहु,
भव क्लेशा नर हरि ॥१०२॥

कहां जाऊं स्वामी गरुड़,
रथ गामी पति रमा ।
लखौं बारंबारा सुत,
कनकदारा हित समा ॥
विषय माया सानी हृदय,
गंदलानी मति क्षमा ।
नहीं कोई मेरे इक,
सरण तेरे कर क्षमा ॥१०३॥

समै खोया सारा जग,
समुझि सारा सुख मई ।
रही भारी आसा लखि,
कलि तमासा नित नई ॥
कहूं पै क्या हा, मैं सब,
छल लखा मैं, दुखदई ।
हरे तारो तारो, शरण,
प्रभु तारो, रिपु छई ॥१०४॥

ग्रसे माया डोरा, विषय,
दृढ़ कोरा दुखमई ।
नचौंताता थेई ततत,
तत थेई थेई थई ॥
मिलै तौ हूं लातें कटु,
जहर बातें नित नई ।
हरे तारो तारो, शरण,
प्रभु तारो रिपु छई ॥१०५॥

अपूर्ण

ॐ नमः शिवायः बैंक में

(स्वर्ण पदक इनाम)

प्रयागकी अर्द्ध कुम्भी के मौके पर महारुद्र यज्ञ के समय काशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक के महोत्सव में मुकाम सेलथा स्टेट बड़ोदा के रईस श्रीमान् रणछोड़भाई का निज हाथ का लिखा हुवा ३५ लाख मंत्र जमा किया गया था। सभा के बीच में स्वर्ण पदक तथा स्वर्ण के तार में मढ़ी हुई रुद्राक्ष की माला व अनेक सुन्दर चित्रादि इनाम दिये गये-इसी प्रकार नड़ीआद की शाखा से श्रीमती काशीबैन का निज हाथ का लिखा हुवा १८ लक्ष पंचाक्षरी मंत्र जमा किया गया था ! इनको भी स्वर्णपदक तथा स्वर्ण के तार में मढ़ी हुई रुद्राक्ष की माला आदि इनाम देकर विशेष रूपसे इन व्यक्तियों की प्रशंसा कर धन्यवाद दिया गया। इसी प्रकार जिस २ व्यक्ति का विशेष संख्या में मंत्र लिखा जमा हुवा था चित्रों के सहित किसी को चांदी के तार में मढ़ी हुई रुद्राक्ष की माला किसी को शिवपुराण-किसी को विष्णुपुराण देवी भागवतपुराण-उपनिषद्-भगवद्गीता-बृहत्स्तोत्र ब्र० शिवचैतन्यजी को सुन्दर हारमोनियम पेटी तथा तबला शिवभजन के लिये दिया गया। अबतक बैंक में १२१ करोड़ लिखित मंत्र जमा हुए हैं। सभास्थानीय सर्व सज्जन वृन्द तथा बैंक की शाखावालों की आज्ञानुसार सदा के लिए मंत्र लिखना चालू रहेगा।

अहमदाबादकी शाखा में प्रति सोमवार को मन्त्र लिखने वालों के कल्याणार्थ श्री ॐ कारेश्वर महादेव का विशेष शृंगारविशेष पूजन-रुद्राभिषेक तथा हवन आरती व. जगत में सुख शान्ति के लिए प्रार्थना की जाती है. श्रावण तथा भाद्रपद द्वितीय भाद्रपद-व अश्विन (चातुर्मास) में ॐ नमः शिवाय बैंक के अन्दर अनेक धार्मिक उत्सव आदि मनाए जायंगे

विशेष सूचना ।

ब्रह्मनिष्ठ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ श्री स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज मण्डलेश्वरजी भक्तजनों की प्रेरणा से वैशाख शुक्ल १३ (त्रयोदशी) को काशी से चातुरमास के लिए अहमदाबाद पधार गये हैं। मंत्रकोष (बैंक) सम्बन्धि किसी भाई को कुछ विशेष पूछना हो। वे कृपया निम्न लिखित पते पर पत्र व्यवहार करें ।

ठि० संन्यास आश्रम पलिसब्रीज
अहमदाबाद ।

भवदीय—शुभचिंतक
मैनेजर—ब्र० चैतन्यानन्द भूतपूर्व पं० धर्मदत्त शर्मा

भजन

[संग्रहकर्त्ता—दुर्गाप्रसाद गुप्त]

(१)

जनम तेरो बातों में बीत गयो,
तूने कबहु न कृष्ण कह्यो ।
पांच बरस का आला भोला,
अब तो बीस भयो ।
मकर पचीसी माया कारण,
देश विदेश गयो ॥
तीस बरस की जब मति उपजी,
लोभ बढ़ै नित नयो ।
माया जोड़ी लाख किरोड़ी,
अजहुं न तृप्त भयो ॥
वृद्ध भये जब आलस उपज्यो,
जप तप कंठ रह्यो ।
साधु की संगति कबहुं न कीनी,
विरथा जन्म गयो ॥
यह संसार मतलब का लोभी,
झूठा ठाठ ठयो ।
कहत कबीर समझ मन मूरख,
तू क्यों भूल गयो ॥

(२)

राम राम रटु राम राम रटु,
राम राम जपु जीहा ।
राम नाम नव नेह मेह को,
मन हठि होहि पपीहा ॥
सब साधन फल कूप सरित,
सर सागर सलिल निरासा ।
राम नाम रति स्वाति सुधा सुभ,
सीकर प्रेम पियासा ॥
गरजि तरजि पाषाण बरषि पवि,
प्रीति परिखि जिय जानै ।
अधिक अधिक उमंग उर,
पर परमित पहिचानै ॥
राम नाम रति, राम नाम गति,
राम नाम अनु रागी ।
है गये हैं जे होहिंगे आगे तेइ,
त्रिभुवन गनिपत बड़ भागी ॥
एक अगमन अगम गवन करि,
बिलंबन छिन छिन छाहैं ।
तुलसी हित अपनी अपनी दिशि,
निरुपधि प्रेम बिना ॥

———

REGD. No. L 3171

उत्तर भारत में पवित्र भावों की एक मात्र प्रचारिका

मासिक पत्रिका

भक्ति

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) से भक्ति नाम की मासिक पत्रिका [illegible] वर्षों से प्रकाशित हो रही है जनता में धार्मिक भावों की जागृति, समाज सुधार और शिक्षा प्रचार इसका मुख्य उद्देश्य है। आप अपनी सन्तान को सुसंस्कृत, सुशिक्षित और सुशील बनाने के लिये, अपनी गृहिणी को पतिव्रत धर्म सिखाने और आदर्श आर्य रमणी बनाने के लिये एवं अपने आपको भगवद्भक्त और महान बनाने के लिये भक्ति अवश्य मंगाइये। हजार जगह से बचत करके =) भेजकर साल भर तक ग्राहक बन जाइये।

दुहरा लाभ

भक्ति एक पारमार्थिक पत्रिका है धन कमाना इसका उद्देश्य नहीं है, यह सदा अपने ग्राहकों की भलाई और लाभ का ध्यान रखती है। आपको =) में भक्ति तो साल भर तक मिलती ही रहेगी परन्तु एक लाभ यह होगा कि भक्ति के पुराने विशेषांकों में से कोई सा एक विशेषांक अपनी इच्छानुसार उपहार में मिलेगा विश्वास कीजिये कि भक्ति के पाठ मात्र से आप एक अलौकिक आनन्द और स्वर्गीय सुख का अनुभव करेंगे। इसके पवित्र भावों की धुरन्धर विद्वानों ने प्रशंसा की है।

मैनेजर "भक्ति"

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

जिला (गुड़गावाँ)

मुद्रक तथा प्रकाशक मुक्तानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" भगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी।